कोविड-19 और इलेक्ट्रोपैथी
जागरण, बचाव और चिकित्सा
वेबीनार विशेषांक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

WEBINAR REACH : YouTube 3000+ facebook 35000+

प्रकृति का प्रहार वायरस का संहार

"परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों के साथ इलेक्ट्रोपैथी को बढ़ावा देने की जरूरत"

कलराज मिश्र
राज्यपाल, राजस्थान

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

संविधान की प्रस्तावना

'**हम, भारत के लोग**, भारत को एक **सम्पूर्ण प्रभुत्व - सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक **न्याय**, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की **स्वतंत्रता**, प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा**में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिती मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**'

सम्पादकीय टीम- डॉ. संजय मिश्र, स्वतंत्र पत्रकार एवं डॉ. अजय दिवाकर

स्वस्थ और सुखी विश्व हेतु प्रकृति को करें पुनः प्रतिष्ठित

आह्वान

श्वेता जैन
शिक्षाविद, जयपुर

इस तथ्य में कोई संदेह नहीं कि सनातनी जीवन-मूल्यों ने समग्र विश्व को ज्ञान के आलोक से भर दिया। इसके तत्व- दर्शन से समृद्ध ग्रंथों- वेदों और उपनिषदों में प्रकृति के संरक्षण और संवर्धन को सुनिश्चित करने के लिए उसे लोक-जीवन में पूज्य बना दिया। लेकिन विश्व में राजनीतिक और आर्थिक सत्ता तथा प्राकृतिक संसाधनों पर एकाधिकार के लिए हो रहे शक्ति संघर्ष ने समस्त मानव जाति के अस्तित्व पर ही प्रश्न खड़ा कर दिया है। ये बात चीन के वुहान शहर से निकले मैन मेड वायरस के खूनी खेल ने और स्पष्ट कर दी है।

कोविड-19 जैसी विकराल और महाविनाशक महामारी को पराजित कर मानवता को संजीवनी प्रदान कर उसे विजयी बनाने के अभियान में विविध चिकित्सा पद्धतियों ने नि:संदेह अमूल्य योगदान प्रदान किया है। इस महान कार्य में इलेक्ट्रोपैथी पद्धति के चिकित्सकों ने भी अपने शोधपरक, प्रामाणिक और सार्थक सुप्रयासों के फलस्वरूप पीड़ित मानवता को अमृत-तुल्य औषधि से पुनर्जीवन प्रदान किया है। इसी विषय पर एक सामयिक वेबीनार का आयोजन किया गया जिसे इलेक्ट्रोहोम्योपैथी चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष श्री हेमंत सेठिया, मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल, राजस्थान श्री कलराज मिश्र, भारत सरकार में भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम तथा संसदीय कार्य राज्यमंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल, लोकसभा सांसद जयपुर शहर श्री रामचरण बोहरा ने भी सम्बोधित किया।

वेबीनार में श्री हेमंत सेठिया के निर्देशन में प्रकाशित 'कोविड-19 और इलेक्ट्रोपैथी- जागरण, बचाव एवं चिकित्सा' विषयक संकलित शोध पुस्तिका का लोकार्पण माननीय राज्यपाल महोदय ने किया जिसमें कोरोना वायरस जनित महामारी कोविड-19 से संघर्ष और सफलता का तथ्यात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

वेबीनार के प्रथम चरण में श्री वेदांत सेठिया ने इलेक्ट्रोपैथी पर एक संक्षिप्त और ज्ञानवर्धक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रस्तुत की। इससे पूर्व माननीय राज्यपाल महोदय ने भारत के संविधान की प्रस्तावना एवं मूल कर्तव्यों का वाचन किया।

वेबीनार में सक्रिय सहभागिता करने वाले गणमान्य जनों में लोकसभा सांसद अजमेर श्री भागीरथ चौधरी, लोकसभा सांसद जयपुर ग्रामीण श्री राज्यवर्धनसिंह राठौड़, लोकसभा सांसद जालोर श्री देवजी पटेल, लोकसभा सांसद भरतपुर श्रीमती ललिता कोली के साथ ही इलेक्ट्रोहोम्योपैथी परिषद के सभी अग्रणी सदस्यगण शामिल थे।

□□□

वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों का मानव कल्याण के लिए उपयोग किए जाने की बहुत आवश्यकता

प्रेरक पाथेय

कलराज मिश्र
माननीय राज्यपाल, राजस्थान

यह समय सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का है। वैश्विक स्तर पर जिस तरह से सूचना और संचार तकनीक आगे बढ़ रही है, यह जरूरी है कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों से जुड़े बेहतरीन परिणामों को इस स्तर पर साझा किया जाए; ताकि ज्ञान की ऐसी संस्कृति विकसित हो, जिसमें परस्पर आदान-प्रदान से रोग-मुक्त विश्व की ओर हम आगे बढ़ सकें। कोरोना के इस दौर में विश्व स्तर पर आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के महत्व को स्वीकार किया गया। इसी तरह होम्योपैथी और इलेक्ट्रोपैथी जैसी चिकित्सा पद्धतियों पर भी देश में निरंतर शोध और अनुसंधान का मैं पक्षधर हूं।

कोविड-19 और इलेक्ट्रोपैथी- जागरण, बचाव और चिकित्सा विषय पर आयोजित इस वेबीनार से जुड़े सभी गणमान्य बंधुओं और भाइयों-बहनों का स्वागत और अभिनंदन करता हूं।

आज का वेबीनार बड़ा ही महत्वपूर्ण है और निश्चित रूप से चिकित्सा के क्षेत्र में उठाया गया यह क्रांतिकारी कदम है। इस पद्धति के शोध और विस्तार में संलग्न सभी बंधुगण निश्चित रूप से इस चिकित्सा पद्धति के माध्यम से गंभीर से गंभीर रोग का निवारण भी कर सकते हैं।

ऐसे समय में, जब पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है, हम सभी ने इस बात को गहराई से अनुभव किया है कि कोरोना से बचाव में एलोपैथी के साथ ही पारंपरिक भारतीय आयुर्वेद और अन्य वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। सभी स्तरों पर यही प्रयास हो रहा है कि जल्द से जल्द कोरोना से विश्व मुक्त हो।

इस वैश्विक महामारी के समय हमने देखा है कि किस प्रकार विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों, विशेष रूप से हमारी प्राचीन आयुर्वेद और उसके साथ योग, प्राकृतिक चिकित्सा, होम्योपैथी आदि ने लोगों को रोगों से लड़ने की, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में और अपने शरीर को कोरोना से लड़ने में सक्षम बनाने में अद्भुत परिणाम दिखाएं हैं। इस संबंध में मैं पूर्णतया हर्बल चिकित्सा पद्धति इलेक्ट्रोपैथी का भी विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा क्योंकि इस चिकित्सा पद्धति ने राजस्थान में इस महामारी से लड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस बारे में सेठिया जी ने भी अपने भाषण में उल्लेख किया है।

मैंने पढ़ा है कि इलेक्ट्रोपैथी दवाओं का निर्माण विविध प्रकार के पेड़-पौधों से किया जाता है। इस वेबीनार में शामिल होने से पहले मैंने खास तौर से इस चिकित्सा पद्धति के बारे में अध्ययन किया और मुझे पता चला कि करीब 114 पौधों से इसकी दवा बनती है। पेड़-पौधों से प्राप्त रस में उपस्थित धनात्मक और ऋणात्मक शक्तियों के द्वारा इस पद्धति में इलाज किया जाता है।

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई है कि यह पूरी तरह से हर्बल चिकित्सा पद्धति है और अपने प्रेजेंटेशन में यह बात वेदांत सेठिया जी ने जिस तरह से दर्शाई है, उसे देखने के

वेबीनार में माननीय राज्यपाल, राजस्थान श्री कलराज मिश्र जन-शिक्षण के उद्देश्य से प्रकाशित इलेक्ट्रोपैथी की शोधपरक पुस्तिका का लोकार्पण करते हुए।

पश्चात तो स्पष्ट है कि वनस्पतियों के जरिए न केवल ग्रामीण जन की आजीविका निर्भर करती है, वहीं उसके माध्यम से वे औषधि निर्माण करते हुए सारे रोगों को दूर करने में सक्षम भी होते हैं। मेरा मानना है कि अगर इस प्रक्रिया को ढंग से लागू करने का प्रयास किया गया, तो इलेक्ट्रोपैथी के माध्यम से गंभीर से गंभीर रोगों का भी इलाज हो सकता है।

मैं यह मानता हूं कि मानवता के कल्याण के लिए परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों के साथ ही इलेक्ट्रोपैथी जैसी वैकल्पिक पद्धतियों को भी बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है। इसलिए जरूरी यह भी है कि ऐसी चिकित्सा पद्धतियों के सकारात्मक परिणामों पर गहन शोध और अनुसंधान किया जाए। इसके साथ ही इनके लिए सकारात्मक माहौल बनाने और उचित समर्थन देने का कार्य भी निरंतर चलता रहे।

यह समय सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का है। वैश्विक स्तर पर जिस तरह से सूचना और संचार तकनीक आगे बढ़ रही है, यह जरूरी है कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों से जुड़े बेहतरीन परिणामों को इस स्तर पर साझा किया जाए। ताकि ज्ञान की ऐसी संस्कृति विकसित हो, जिसमें परस्पर आदान-प्रदान से रोग मुक्त विश्व की ओर हम आगे बढ़ सकें। हमारे यहां कहा भी गया है-

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मां कश्चित् दुःख भागभवेत।।

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी रोग मुक्त हों, सभी मंगल घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुख का भागी नहीं बनना पड़े।

मैं समझता हूं कि इस वेबीनार की इस भावना के तहत वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों का मानव कल्याण के लिए उपयोग किए जाने की सोच पर कार्य करने की आज बहुत आवश्यकता है। कोरोना के इस दौर में हमने यह देखा है कि आयुर्वेद ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विश्व स्तर पर भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के महत्व को स्वीकार किया गया है। इसी तरह होम्योपैथी और इलेक्ट्रोपैथी जैसी पद्धतियों पर भी देश में इस तरह के शोध और अनुसंधान का मैं पक्षधर हूं जिससे भारत वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों में भी विश्व में बड़ा बन सके।

हमें इस बात पर चिंतन-मनन करने की जरूरत है कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के जरिए कैसे स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए अधिक से अधिक कार्य हो सके। अभी संवाद में बताया गया कि इलेक्ट्रोपैथी ने बहुत से स्तरों पर रोगों के इलाज में कारगर भूमिका निभाई है। यह महत्वपूर्ण है। इसके लिए मैं इस पद्धति से जुड़े चिकित्सकों की सराहना करता हूं। **परंतु मेरा यह भी मानना है कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों से इलाज को बढ़ावा देने के साथ ही इससे जुड़े ज्ञान और शोध को भी आधुनिक विज्ञान से जोड़ते हुए बृहत् स्तर पर कार्य किया जाए। वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों में शोध और अनुसंधान ऐसे कार्य हैं जिनसे पूरी मानवता का भला हो सकता है।**

शोध और अनुसंधान किसी भी कार्य में बहुत ही महत्वपूर्ण आयाम होते हैं। इसलिए मैं समझता हूं कि अगर इलेक्ट्रोपैथी के अंदर और भी व्यापक तौर पर आधुनिकतम तरीके से शोध और अनुसंधान किया जाए, तो निश्चित रूप से आगे चलकर यह पद्धति एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकती है।

अभी मान्यता के संबंध में श्री सेठिया जी ने बात रखी। श्री मेघवाल जी ने स्वयं कहा कि वे इस दिशा में प्रयासरत हैं और **स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री अश्विनी चौबे जी ने स्वयं इस बात को कहा है कि इसे शोध के लिए रखा गया है। शायद जल्दी ही मान्यता प्राप्त हो सकेगी। इसके साथ ही श्री रामचरण बोहरा, श्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ और भागीरथ जी चौधरी जैसे हमारे सांसद गण अगर ये सभी मिलकर**

माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र वेबीनार से जुड़े प्रबुद्ध जनों को संबोधित करते हुए।

इसका रिप्रेजेंटेशन उनके सामने प्रस्तुत करें राजस्थान की तरफ से, तो निश्चित रूप से मान्यता प्राप्त होगी ही। सकारात्मक दृष्टि से प्रयास हो, तो ज्यादा ठीक होगा और यह निश्चित रूप से हो सकता है।

इसको और भी व्यापक रूप से बढ़ाने के लिए अनुसंधान और शोध की बहुत ज्यादा आवश्यकता है। कोरोना की वैश्विक आपदा में इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों द्वारा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के कार्य तथा कोरोना के माइल्ड तथा मॉडरेट केसों में इनके उपचार के बारे में जानकर मुझे प्रसन्नता हुई है। जैसा कि हेमंत सेठिया जी ने स्वयं कहा कि 400 लोगों का उपचार किया। उनमें 50 फ़ीसदी ऐसे थे जो सीधे-सीधे इसी पद्धति को अपनाकर उन्होंने अपना इलाज कराया है और लगभग सभी स्वस्थ भी हैं। वास्तव में यह बहुत अच्छा परिणाम है।

मेरा आप सब से इस संबंध में यही कहना है कि जो-जो कार्य कोरोना को लेकर आपके द्वारा किए जा रहे हैं, उसका गहन विश्लेषण करें और पूरे डॉक्यूमेंटेशन के साथ सभी के बीच उसका प्रस्तुतीकरण भी हो। कम से कम साइड इफेक्ट्स वाली विधाओं को अगर इलाज में सम्मिलित कर सकें, तो सामान्य जन के स्वास्थ्य के लिए सुलभ इस सरल और सस्ती चिकित्सा पद्धति की महत्ता को हम बड़े स्तर पर सबके सामने ला सकेंगे।

केंद्र सरकार ने कोविड-19 से लड़ने के लिए पहली बार सभी आयुष चिकित्सा पद्धतियों को अनुमति प्रदान कर इन्हें प्रोत्साहित करने का कार्य किया है। केंद्र सरकार का यह कदम उसके लोक कल्याणकारी कार्य को व्यक्त करता है।

कोरोना की इस महामारी के समय हमने यह देखा है कि इस बीमारी से लड़ना संपन्न या निर्धन किसी भी वर्ग के लोगों के लिए समान रूप से कष्टदायक और मुश्किल रहा है। महंगे से महंगे इलाज से भी हम कोविड-19 से लड़ पाएं, ऐसा आवश्यक नहीं है। बीमारी के ठीक हो जाने के बाद इसके कुप्रभाव भी काफी चिंताजनक रहे हैं।

ऐसा विशेषज्ञ भी कहते हैं कि नेगेटिव हो जाने के बाद भी जिस तरह से इम्यूनिटी बढ़नी चाहिए, जिस तरह से प्रतिरोधक क्षमता बढ़नी चाहिए, वह नहीं बढ़ रही और उसका परिणाम ये हुआ है कि उससे कई लोगों की जानें भी चली गई। उनकी इम्यूनिटी नहीं बन पाई, उस दिशा में भी सोचने की आवश्यकता है। कैसे कोरोना का सामना करने के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है, इसके बारे में भी विचार करने की आवश्यकता है। इलाज के साइड इफेक्ट्स और बीमारी के बढ़ने के बाद के लक्षण भी चिंता का विषय हैं। इससे भी जरूरी है कि साधारण जन के लिए सरल-सुलभ और सस्ती चिकित्सा सेवाएं निरंतर पहुंचाई जाए, और ऐसी चिकित्सा पद्धतियों को प्रोत्साहन भी मिले, जो सभी जगह सहज और सुलभ हो।

इलेक्ट्रोपैथी क्षेत्र में कार्यरत सभी चिकित्सकों ने कोरोना के दौरान जो सेवाएं दी है, उसकी मैं प्रशंसा करता हूं और आग्रह करता हूं कि वे आगे भी मानव-कल्याण के लिए कार्य करते रहें। इलेक्ट्रोपैथी के माध्यम से कोरोना जैसी महामारी को भगाने, और उस पर विजय प्राप्त करने की दिशा में हमने काम किया है। मैं समझता हूं कि इस ओर अधिक प्रामाणिकता के साथ कदम बढ़ाये जाएं, इसी शुभकामना के साथ मैं मेरी बात समाप्त करता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

□ □ □

कोरोना महामारी में इलेक्ट्रोपैथी की प्रामाणिकता को मिली जन स्वीकार्यता

अंतर्दृष्टि

हेमंत सेठिया
अध्यक्ष
इलेक्ट्रोहोम्योपैथी चिकित्सा परिषद्
राजस्थान

इलेक्ट्रोपैथी के इतिहास, विकास और विशेष रूप से कोविड-19 के संदर्भ में हुए शोध एवं अनुसंधान, अनुप्रयोग, परिणाम एवं लाभ पक्षों से आम जन को अवगत कराना आवश्यक है, जिससे वे अधिकाधिक संख्या में इस पद्दति का लाभ ले सकेंगे। कोरोना महामारी के विषम कालखंड में इलेक्ट्रोपैथी के प्रयोग और उसकी प्रामाणिकता को पहले से अधिक जन स्वीकार्यता मिली है लेकिन शासन-सरकार की औपचारिक और कानूनी स्वीकार्यता के बिना लाखों-करोड़ों पीड़ित जन इसका समुचित लाभ नहीं ले पा रहे हैं।

नमस्कार!

आज के इस इलेक्ट्रोपैथी वेबीनार में संपूर्ण देश और विश्व के अनेक देशों से लाइव प्रसारण से जुड़े हुए सभी महानुभावों का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूं।

अभी एक डॉक्यूमेंट्री के द्वारा इलेक्ट्रोपैथी का परिचय हम सबके सामने आया। इसकी विकास-यात्रा का एक लघु स्वरूप हमको देखने को मिला। यह अत्यंत ही आनंद का विषय है कि इस यात्रा में साक्षी रहे अनेक महानुभाव आज इस कार्यक्रम में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित हैं। यह हमारे लिए प्रसन्नता और आनंद का विषय भी है।

सामान्यतया कोई भी नई चिकित्सा पद्धति या नया विचार यदि आता है, तो उसकी स्वीकार्यता सहज नहीं होती। स्वामी विवेकानंद जी ने इस विषय को इस प्रकार से भी कहा है कि कोई भी नया आने वाला विचार सबसे पहले नकार दिया जाता है। फिर दूसरी अवस्था में उस विचार का विरोध होता है और तब उसकी स्वीकार्यता आती है। इलेक्ट्रोपैथी के संदर्भ में भी ऐसा ही हुआ है। इन तीनों चरणों में से गुजरकर इलेक्ट्रोपैथी आज व्यापक रूप से स्वीकार्यता की अवस्था में है।

विगत 20 वर्षों की अवधि में जयपुर में अनेक राष्ट्रीय सेमिनार इलेक्ट्रोपैथी के विषय को लेकर आयोजित किए गए। इन सेमिनारों में जो शोध के विषय आए, रिसर्च के द्वारा जो बातें आई, इलेक्ट्रोपैथी के संबंध में जो परिणाम आए; उनकी पूरे देश में सराहना हुई और मुझे यह कहते हुए गौरव हो रहा है कि इलेक्ट्रोपैथी के क्षेत्र में जो आने वाले नए-नए विषय हैं, जो शोधपरक जानकारियां हैं, इनके प्रति लोगों में बहुत विश्वास बढ़ा है। देशभर में ये मान्यता बनी है कि राजस्थान से अगर कोई विषय आता है, तो वह प्रामाणिक है, तथ्यपरक है और रिसर्च के बाद में, अनुभव के बाद में उसे प्रसारित किया जाता है।

इसी तरह से ध्यान में आता है कि इस राज्य के अनेक स्वास्थ्य मंत्रियों, विषय विशेषज्ञों के साथ पिछले समय में हमने किडनी स्टोन, पाइल्स, यूटेराइन फाइब्रोइड और

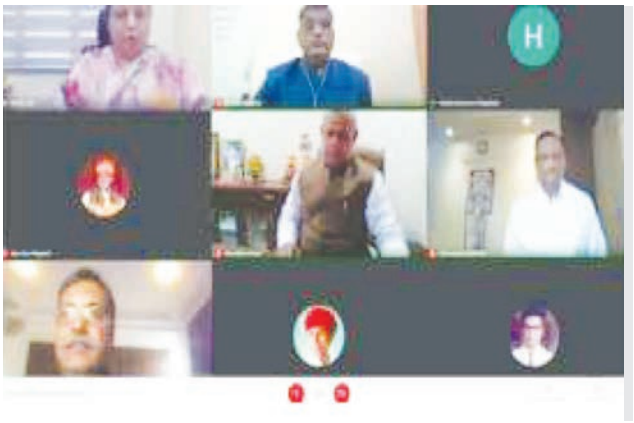

कैंसर की द्वितीय अवस्था तक इसके उपचार की प्रामाणिकता को लेकर हमने राष्ट्रीय सेमिनार किए। देशभर से विशेषज्ञ आए, सबके बीच मंथन हुआ और उसके बाद कुछ निष्कर्ष इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों के सामने हमने रखे और उसके आधार पर ही इसका विकास आज सर्वत्र हो रहा है।

इस समय एक बड़ी महामारी से पूरा विश्व ग्रसित है। भारत भी इससे अछूता नहीं है और भारत के ग्रामीण क्षेत्र के भू-भाग को छोड़ दें, तो लगभग पूरा देश इसकी चपेट में है। मुझे ध्यान में आता है कि दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर से जब यह वायरस प्रसारित हुआ और विश्व भर में इसकी चर्चा प्रारंभ हुई, तभी से इसके बारे में अलग-अलग प्रकार की धारणाएं हैं। यदि मैं इसे अनजानी-सी बीमारी कहूँ, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अनजानी-सी इसलिए कहना पड़ रहा है क्योंकि यह बीमारी क्यों और कैसे हो रही है, इसका कारण क्या है, इसके बारे में आज भी भिन्न-भिन्न मत हैं।

हम सब को ध्यान में है कि कोरोना को लेकर सबसे पहला विषय आया कि यह बीमारी कोई जीवाणु से उत्पन्न हो रही है। फिर आया कि यह कोई बैक्टीरिया है और फिर आया कि यह कोई वायरस है। इसके प्रभाव-क्षेत्र पर भी अलग-अलग मत आज भी आ रहे हैं। एक बड़ा विषय आया कि यह रेस्पिरेटरी सिस्टम को अफेक्टेड कर रहा है। फिर आया कि नहीं-नहीं, यह इंटेस्टाइन पर भी जा रहा है। फिर ब्रेन पर भी इसका प्रभाव हो रहा है, इस प्रकार के विषय आज भी चल रहे हैं। इसके म्यूटेशन को लेकर भी अनेक प्रकार के मत हैं। लेकिन पूरे देश और दुनिया में, मैं समझता हूं, फरवरी-मार्च के आते-आते स्पष्ट हुआ कि यह जो कोरोना वायरस है, कोविड-19 है, यह मुख्य रूप से हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता पर आक्रमण कर रहा है। जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम है, इम्यूनिटी पावर कम है, उनको यह ज्यादा प्रभावित कर रहा है और मुझे यह कहते हुए गौरव है कि हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री जी ने बहुत प्रारंभ से इस विषय को समझ कर एक उपयुक्त प्रकार का वातावरण देश में तैयार किया। राजस्थान सरकार ने भी इस विषय को गंभीरता से समझा और इसके लिए जो भी उपाय किए जा सकते थे, वे उन्होंने किए।

अप्रैल के आते-आते आयुष चिकित्सा पद्धतियों को इसमें शामिल किया गया। इससे लड़ने के जितने भी उपक्रम बनाए गए, उसमें आयुष को भी मौका दिया गया और इसके कारण से देश में एक विषय बना। आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी जितनी भी प्रकार की चिकित्सा पद्धतियां हैं, उन सब ने इस काम में खुद को झोंक दिया। इलेक्ट्रोपैथी भी इससे अछूती नहीं रही और इलेक्ट्रोपैथी ने अपना एक पैमाना तय किया। मार्च के अंदर ही हमने एक बड़ी वेबीनार के द्वारा इस विषय पर चर्चा की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमको भी इम्यूनिटी पावर बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

मैं आप सभी को बताना चाहूंगा कि हमने इसकी योजना में राजस्थान को सात संभागों में बांटा और काम प्रारंभ किया तथा हर जिले में हमारे चिकित्सकों ने इम्यूनिटी पावर को बढ़ाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया। इस दवा के लिए और भी स्वयंसेवी संस्थाएं आगे आई। कोई एक-दो-तीन नहीं, तो सैकड़ों की संख्या में स्वयंसेवी संस्थाएं आगे आई और उन्होंने इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। यदि मैं मुख्य रूप से बात करूं तो नगरपालिका का इसमें पूरा सहयोग रहा, पुलिस-प्रशासन

इसमें जुटा, बार एसोसिएशन और हमारे शिक्षण संस्थान जुटे। सेवा भारती, भारत विकास परिषद, बीएसएनएल जैसे अनेक प्रकार के संगठनों ने आगे आकर हमसे दवाओं की मांग की। जब हमने इसका प्रयोग प्रारंभ किया, तो साथ में नीति बनाई कि रिसर्च का दृष्टिकोण रखते हुए भी हमें इसे करना चाहिए।

मान्यवर महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगा कि हमने अभी तक 26396 व्यक्तियों को इलेक्ट्रोपैथी दवाएं दी, जिनको हम इम्यूनिटी बूस्टर कहते हैं। जिसमें हमारी दो दवाएं प्रमुख थी- एक दवा थी स्क्रोफोलोस-1 जिसे लघु रूप में हम S-1 कहते हैं और दूसरी दवा थी वर्मी फ्यूगो-1, जिसे लघु रूप में हम VER-1 कहते हैं। इन दोनों दवाओं का प्रयोग हमने व्यापक रूप से किया और इसके परिणाम मैं आपको बताना चाहूंगा कि 26396 व्यक्तियों में हमारे पास तीन बार किया गया अध्ययन है। इस अध्ययन के आधार पर किशनगढ़ में केवल दो लोग ही कोरोना से पीड़ित हुए, जिन्होंने इलेक्ट्रोपैथी दवा ली थी। किशनगढ़ के सम्माननीय जनप्रतिनिधि भी हमारे बीच में हैं। जिन्होंने स्वयं आगे बढ़कर इस काम को किया था और कुछ 60-70 लोग ऐसे हैं जिनको यह दवा लेने के बाद भी जुकाम-सर्दी हुआ है। शेष सभी लोग एकदम स्वस्थ हैं।

यह गौरव का विषय है कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने धन्वंतरि जयंती पर कहा था कि दिल्ली के 8000 पुलिसकर्मियों पर आयुर्वेद दवाओं का प्रयोग किया और यह बहुत बड़ा प्रयोग है। लेकिन आज मैं भी आपको बताना चाहूंगा कि इस चिकित्सा पद्धति में भी इतना बड़ा एक व्यापक अध्ययन हुआ है। इस अध्ययन को सामान्य रूप में नहीं किया है। बल्कि लिखित रूप में पूरे डाटा इकट्ठा करते हुए, जो अभी भी जारी है।

अगर इसके परिणामों की बात करूं, तो मैं यह दावा कतई नहीं करूंगा कि इलेक्ट्रोपैथी में हम इसकी चिकित्सा कर रहे हैं लेकिन हमारे सामने जो परिणाम आए हैं, उनको मैं आज इस मंच से बताना चाहूंगा। हमारे पास नित्यप्रति आने वाले कोरोना पॉजिटिव पेशेंट, जिनको हमने दवा दी है, कुल 400 से अधिक रोगियों का डाटा हमारे पास है जो कॉविड पॉजिटिव थे और कॉविड नेगेटिव हुए। इनमें से ऐसे भी रोगी हैं जिन्होंने मिक्स ट्रीटमेंट लिया होगा। यानी एलोपैथी या आयुर्वेद के साथ-साथ इलेक्ट्रोपैथी का प्रयोग किया होगा। लेकिन इसमें 50% से भी अधिक ऐसे भी रोगी हैं जिन्होंने केवल और केवल इलेक्ट्रोपैथी दवाओं का सेवन किया और सेवन करने के बाद आज पूर्ण स्वस्थ हैं। आज मान्यवर राज्यपाल महोदय को जो पुस्तक हम भेंट कर रहे हैं उसके अंदर इसका कुछ लघु रूप में संकलन किया है, वह सामने आएगा ही। हम चिकित्सा की भी यदि बात करेंगे, तो इलेक्ट्रोपैथी अपना एक महत्वपूर्ण रोल इसमें अदा कर रही है। अभी-अभी थोड़े दिन पहले आयुर्वेद ने अपना एक डाटा जारी किया था 60 रोगियों पर। उन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर कहा कि आयुर्वेद की दवाएं इस चिकित्सा के अंदर कैसे कारगर हैं। मुझे इस बात का गर्व है कि डब्ल्यूएचओ ने भारत को वैकल्पिक चिकित्सा पर अध्ययन करने के लिए आग्रह किया है, ताकि वैकल्पिक चिकित्सा को दुनिया भर में लागू कर सके। इसके लिए भारत को प्रमुख बनाया है।

इलेक्ट्रोपैथी अपने न्यूनतम संसाधनों के साथ आज प्रगति-पथ पर अग्रसर है। हम हमारे संसाधनों का उपयोग करते हुए कोरोना जैसी महामारी में अपना एक बड़ा योगदान दे रहे हैं। इसके प्रति जागरण, बचाव और इसकी चिकित्सा को लेकर इसका एक छोटा-सा स्वरूप आपके सामने रखा है। **मैं माननीय राज्यपाल महोदय और सभी जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में विशेष आग्रह करना चाहूंगा कि इस पद्धति का अधिक से अधिक विकास हो, यह पद्धति नीचे गावों तक जाए, इसके लिए कुछ संसाधनों की आवश्यकता हमेशा रहती है। राजस्थान में बोर्ड का गठन जरूर हुआ है, लेकिन अभी उसका इंप्लीमेंटेशन नहीं हुआ है। यदि यह काम शीघ्र होता है, तो यह जो कोरोना महामारी है या ऐसी ही आने वाली अन्य अप्रत्याशित चुनौतियों और रोगों में भी हमारे अनुसंधान का यह कार्य, हमारी चिकित्सा का यह कार्य हम और तेजी से बढ़ा सकते हैं।** लोक-कल्याण के हित में सरल, सस्ती और पूर्णतया हर्बल चिकित्सा पद्धति को हम आगे बढ़ा सकते हैं। ऐसी विनम्र प्रार्थना के साथ में अपना विषय पूर्ण करूंगा।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

□□□

कोरोना वायरस से संघर्ष में इलेक्ट्रोपैथी की सार्थक पहल

दृष्टिकोण

अर्जुनराम मेघवाल
भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम तथा संसदीय कार्य राज्यमंत्री, भारत सरकार

'सर्वे संतु निरामया' यह हमारी जीवन जीने की पद्धति है। भारतीय संस्कृति ने शुरू से ही प्रकृति में उपलब्ध क्या है, उसके आधार पर क्या हम चिकित्सा कर सकते हैं, इसकी जब खोज की, इसका जब रिसर्च किया, तो पाया कि प्रकृति और मानव में समानता है। प्रकृति के जो मेडिसिनल प्लांट्स होते हैं, उनका अर्क निश्चित रूप से शरीर के लिए उपयोगी है ऐसा भारतीय दर्शन भी कहता है। इस पद्धति की मान्यता के लिए आये प्रस्तावों पर भारत सरकार सकारात्मक दृष्टिकोण से विचार करेगी। यह वेबीनार निश्चित रूप से सार्थक कदम है। आगे भी इस दिशा में हम तेजी से बढ़ेंगे, तो कोरोना जैसी महामारी से निजात हमें निश्चित रूप से मिलेगी।

इलेक्ट्रोहोम्योपैथी चिकित्सा परिषद, राजस्थान की ओर से आयोजित 'कोविड-19 और इलेक्ट्रोपैथी- जागरण, बचाव एवं चिकित्सा' विषयक वेबीनार में हेमंत सेठिया जी ने बताया कि इस इलेक्ट्रोपैथी में पेड़-पौधों के अर्क का उपयोग होता है, यही इसका महत्वपूर्ण सार है। पौधों की पोषकता को ही इलेक्ट्रिसिटी के माध्यम से अर्जित करने को हम इलेक्ट्रोपैथी कह सकते हैं। इसी कारण इसका नाम इलेक्ट्रोपैथी रखा गया है और जहां तक प्रेजेंटेशन से हमें जानकारी मिली है कि 114 प्रकार के पौधों का उपयोग इसमें किया जाता है जिनसे इलेक्ट्रोपैथी के लिए दवाएं बनाई जा रही हैं।

देखिए, रामचरण बोहरा जी ने एक विषय रखा कि राजस्थान सरकार ने 9 मार्च, 2018 को इसका बिल पास कर दिया और यह भारत सरकार के स्तर पर अभी मान्यता के लिए पेंडिंग है। मैंने इस संबंध में कुछ डिटेल निकाली है जिसमें स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के समक्ष कुछ सांसदों के द्वारा जब लोकसभा में यह विषय आया, तो 18 सितंबर, 2020 को उत्तर दिया गया है हमारे स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे द्वारा। चौबे जी ने उसमें साफ-साफ कहा है कि आईसीएमआर की अध्यक्षता में एक अंतरिम विभागीय समिति का गठन किया गया है। इसका मतलब मामला प्रोग्रेस पर है और यह जो अंतर विभागीय समिति है, इसमें जितने भी आधार पर प्रस्ताव आएंगे, उस पर सकारात्मक दृष्टिकोण से ही भारत सरकार विचार करेगी, ऐसी उन्होंने मुझे जानकारी भी दी है।

यहां मेरा यह अनुरोध भी रहेगा कि एक अच्छा प्रेजेंटेशन रामचरण बोहरा जी और उपस्थित अन्य सभी सांसदों के माध्यम से हम अगर स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन जी को देंगे, तो इस दिशा में काम तेजी से आगे बढ़ सकता है।

एक विषय जो प्रेजेंटेशन के माध्यम से ही आया है- 'सर्वे संतु निरामया' यह हमारी जीवन जीने की पद्धति भी है और भारतीय संस्कृति ने शुरू से ही प्रकृति में उपलब्ध क्या है, उसके आधार पर क्या हम चिकित्सा कर सकते हैं, इसकी जब खोज की, इसका जब रिसर्च किया, तो पाया कि प्रकृति और मानव में समानता है। यह पाया गया कि प्रकृति में पानी, जिसको हम

जल कहते हैं, यह 72% है, वायु 6% है, धरती 12% है, आकाश 6%है और अग्नि 4%है। यह पांचों तत्व प्रकृति में भी हैं और इसी मात्रा में हमारे मानव शरीर में भी हैं तो निश्चित रूप से प्रकृति और मानव शरीर की समानता है। इससे प्रकृति में जो पौधे होते हैं या प्रकृति के जो मेडिसिनल प्लांट्स होते हैं, उनका अर्क निश्चित रूप से शरीर के लिए उपयोगी है ऐसा भारतीय दर्शन भी कहता है और ऐसा आप के रिसर्च के माध्यम से हमें हेमंत सेठिया जी ने भी बता रहे थे और वेदांत सेठिया जी ने भी हमें प्रजेंटेशन के माध्यम से बताया।

वनस्पति से इलाज, यही इसका सार है। डब्ल्यूएचओ और आईसीएमआर इनका भी आज जिक्र आया जिसकी वैक्सीन पर हमारी राज्यसभा और लोकसभा के फ्लोर लीडर की ऑल पार्टी मीटिंग हुई थी 4 दिसंबर को, तब प्रधानमंत्री जी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि भारत में 8 वैक्सीन पर कार्य चल रहा है। हमारे वैज्ञानिक और डॉक्टर्स अथक मेहनत करते हुए सार्थक प्रयासों में लगे हैं और जल्दी ही हम भारत में वैक्सीन उपलब्ध करा देंगे और इसके आधार पर कोरोना वायरस जैसे संकट से भी मानवता को निजात मिलेगी।

इसमें प्रधानमंत्री जी ने स्वयं एक्टिव रोल अदा किया है और 4 दिसंबर को केवल बोला ही नहीं, उससे पहले वे स्वयं अहमदाबाद, पुणे और हैदराबाद वैक्सीन बनाने के प्रयासों का जायजा लेने गए और वैज्ञानिकों का उत्साहवर्धन भी उन्होंने किया और आज के इस प्रेजेंटेशन में भी प्रधानमंत्री जी का जिक्र आया कि उन्होंने एक स्टेट्समैन की तरह देश का नेतृत्व किया। आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत की और आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत बहुत से ऐसे काम हैं जिनकी शुरुआत हुई और 'वोकल फॉर लोकल' का विषय भी प्रधानमंत्री जी ने स्वयं रखा। तो यह सब विषय जुड़ते हैं रिसर्च में, इन्वेस्टिगेशन में और **यह कोरोना वायरस की जो महामारी पूरी मानव सभ्यता के लिए चैलेंज के रूप में आई है, उसको हराने में हम सब मिलकर काम करेंगे, तो आज का जो यह वेबीनार है, यह भी निश्चित रूप से एक बहुत अच्छा सार्थक कदम है। आगे भी इस दिशा में हम तेजी से बढ़ेंगे, तो कोरोना जैसी महामारी से निजात हमें निश्चित रूप से मिलेगी।**

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं पुन: राज्यपाल महोदय का आभार प्रकट करते हुए मेरी वाणी को विराम देता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

□□□

प्रशस्ति-पत्र

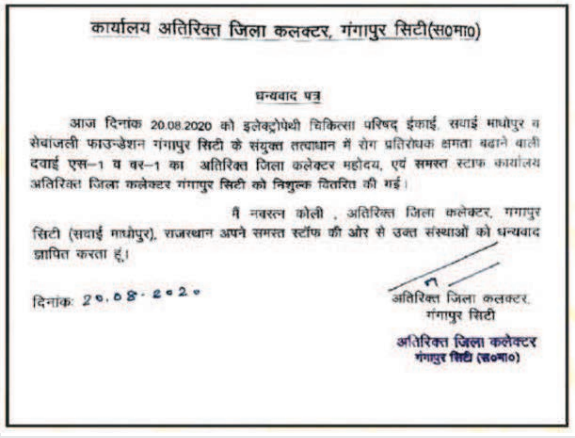

कार्यालय अतिरिक्त जिला कलक्टर, गंगापुर सिटी(स0मा0)

धन्यवाद पत्र

आज दिनांक 20.08.2020 को इलेक्ट्रोपेथी चिकित्सा परिषद इकाई, सवाई माधोपुर व सेवांजली फाउन्डेशन गंगापुर सिटी के संयुक्त तत्वाधान में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाने वाली दवाई एस–1 व वर–1 का अतिरिक्त जिला कलेक्टर महोदय, एवं समस्त स्टाफ कार्यालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर गंगापुर सिटी को निशुल्क वितरित की गई।

मैं नवरत्न कोली , अतिरिक्त जिला कलेक्टर, गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर), राजस्थान अपने समस्त स्टॉफ की ओर से उक्त संस्थाओं को धन्यवाद ज्ञापित करता हूं।

दिनांक: 20.08.2020

अतिरिक्त जिला कलेक्टर,
गंगापुर सिटी

अतिरिक्त जिला कलेक्टर
गंगापुर सिटी (स0मा0)

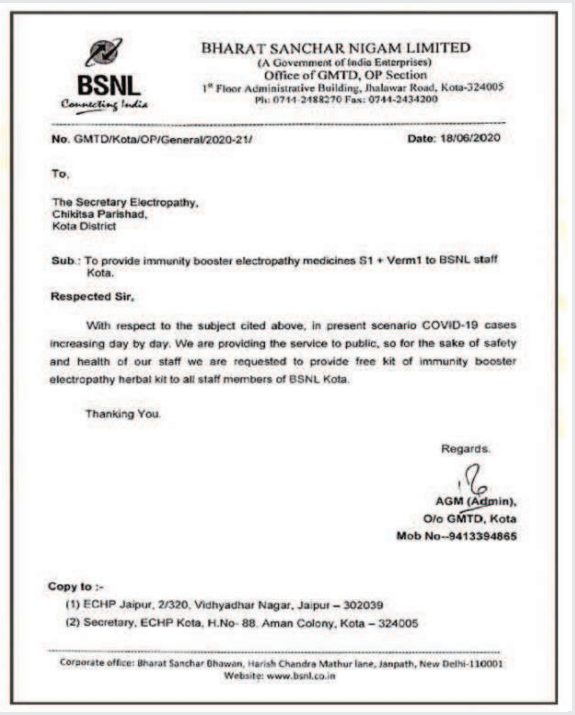

BSNL
Connecting India

BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED
(A Government of India Enterprises)
Office of GMTD, OP Section
1st Floor Administrative Building, Jhalawar Road, Kota-324005
Ph: 0744-2488270 Fax: 0744-2434200

No. GMTD/Kota/OP/General/2020-21/ Date: 18/06/2020

To,

The Secretary Electropathy,
Chikitsa Parishad,
Kota District

Sub.: To provide immunity booster electropathy medicines S1 + Verm1 to BSNL staff Kota.

Respected Sir,

With respect to the subject cited above, in present scenario COVID-19 cases increasing day by day. We are providing the service to public, so for the sake of safety and health of our staff we are requested to provide free kit of immunity booster electropathy herbal kit to all staff members of BSNL Kota.

Thanking You.

Regards.

AGM (Admin),
O/o GMTD, Kota
Mob No--9413394865

Copy to :-
(1) ECHP Jaipur, 2/320, Vidhyadhar Nagar, Jaipur – 302039
(2) Secretary, ECHP Kota, H.No- 88, Aman Colony, Kota – 324005

Corporate office: Bharat Sanchar Bhawan, Harish Chandra Mathur lane, Janpath, New Delhi-110001
Website: www.bsnl.co.in

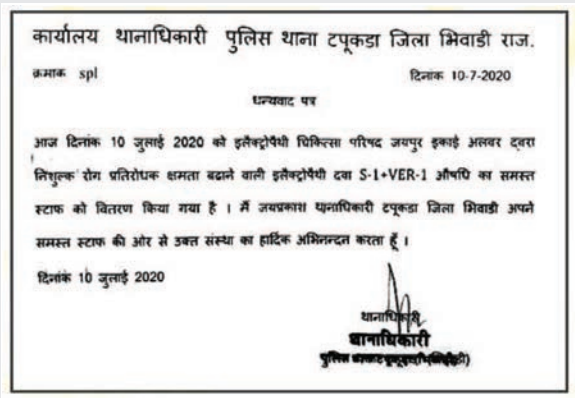

कार्यालय थानाधिकारी पुलिस थाना टपूकडा जिला भिवाडी राज.

क्रमांक spl दिनांक 10-7-2020

धन्यवाद पत्र

आज दिनांक 10 जुलाई 2020 को इलैक्ट्रोपैथी चिकित्सा परिषद जयपुर इकाई अलवर द्वारा निशुल्क रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाने वाली इलैक्ट्रोपैथी दवा S-1+VER-1 औषधि का समस्त स्टाफ को वितरण किया गया है । मैं जयप्रकाश थानाधिकारी टपूकडा जिला भिवाडी अपने समस्त स्टाफ की ओर से उक्त संस्था का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं ।

दिनांक 10 जुलाई 2020

थानाधिकारी

केंद्र में इलेक्ट्रोपैथी की मान्यता के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी

चिंतन-मनन

रामचरण बोहरा
लोकसभा सांसद, जयपुर शहर

कोरोना काल में इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों ने दवाएं देकर लोगों को बचाने का काम किया है। इलेक्ट्रोपैथी के माध्यम से कैंसर जैसी बीमारी में भी सेकंड स्टेज तक उपचार की व्यवस्था है। अभी और भी काम करना है। मेरा विश्वास है कि इस प्रकार के शोध करते हुए इलेक्ट्रोपैथी की विकास-यात्रा को निरंतर बढ़ाया जाना चाहिए जिससे प्रदेश के बाशिंदों को इसका अधिक लाभ मिलेगा। 1865 में इस चिकित्सा पद्धति के संस्थापक श्री सीजर मैटी जी ने इसे खोजा और 9 मार्च, 2018 को राजस्थान में इसे लागू किया गया। केंद्र में इलेक्ट्रोपैथी की मान्यता के लिए सरकार, जनप्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाओं आदि सभी के समन्वित और सामूहिक प्रयास की जरूरत है ताकि पूरे देश में इलेक्ट्रोपैथी काम कर पाएगी और सामान्य एवं गरीब जन को इसका लाभ मिलेगा।

इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सा परिषद के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी भाइयों-बहनों!

वर्तमान की कठिन परिस्थितियों में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य को लेकर जिस तरह की सेवाएं आप दे रहे हैं, वह प्रशंसनीय हैं। राजस्थान सरकार द्वारा मार्च 2018 को इलेक्ट्रोपैथी बिल पारित किया गया, आज मैं समझता हूं उसको अगर इंप्लीमेंट करते, तो आज राजस्थान की जनता इससे लाभान्वित होती।

अभी जिस तरह से हेमंत जी सेठिया ने 26396 लोगों को इस कोरोना काल में दवा देकर बचाने का काम किया है, उनको सुविधाएं और लाभ देने का काम किया, उसके लिए मुक्त कंठ से आयोजकों की प्रशंसा की जानी चाहिए।

1865 में इस चिकित्सा पद्धति के संस्थापक श्री सीजर मैटी जी ने इसे खोजा और 9 मार्च, 2018 को राजस्थान में इसे लागू किया गया। लेकिन वह पूरी तरह से लागू हो, ऐसा मैं माननीय गवर्नर साहब से भी आग्रह करूंगा। इससे राजस्थान के साथ-साथ अन्य प्रदेशों को भी इसका लाभ मिल सकेगा।

आज इस वेबीनार में जिस तरह हेमंत जी सेठिया ने पूरी जानकारी दी, ये आमजन में भी जानी चाहिए हालांकि समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम उन्होंने आयोजित भी किए। इलेक्ट्रोपैथी के माध्यम से लोगों के बचाव का काम किया है और यहां तक कि अभी कोरोना महामारी में इलेक्ट्रोपैथी द्वारा भारत सरकार के प्रधानमंत्री केयर फंड में भी पैसा दिया गया, राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री राहत कोष में भी पैसा दिया गया, ये बहुत राहत का काम किया है। इलेक्ट्रोपैथी के माध्यम से कैंसर जैसी बीमारी में भी सेकंड स्टेज तक उपचार की व्यवस्था है। अभी और भी काम करना है। इसके लिए हेमंत जी सेठिया को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। आपने एक सफल प्रयास करके इसको लागू करने का काम किया है। मेरा विश्वास है कि इस प्रकार के शोध करते हुए इलेक्ट्रोपैथी की विकास यात्रा को निरंतर बढ़ाया जाना चाहिए जिससे प्रदेश के बाशिंदों को इसका अधिक लाभ मिलेगा।

मैं इस अवसर पर आयोजकों, माननीय गवर्नर साहब को और जो जनप्रतिनिधिगण हमारे आग्रह पर इस जन महत्व के वेबीनार से जुड़कर मानवता की रक्षा में रत इलेक्ट्रोपैथी के वाहकों को अपना नैतिक समर्थन दिया, उनके प्रति आभार प्रकट करता हूं।

हमारे केंद्रीय मंत्री माननीय अर्जुनराम जी, जो हमारे इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हैं, इनके माध्यम से भी मैं कहना चाहूंगा कि जब लोकसभा चल रही थी तब भारत सरकार के सामने इस प्रश्न को मैंने उठाया है और आप से भी आग्रह करूंगा कि इलेक्ट्रोपैथी को भारत सरकार द्वारा भी इसे मान्यता दिलवाने में सहयोग करें। मेरा मानना है कि इस उद्देश्य के लिए सरकार, जन प्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाओं सभी के समन्वित और सामूहिक प्रयास की जरूरत है ताकि पूरे देश में इलेक्ट्रोपैथी काम कर पाएगी और सामान्य और गरीब जन को इसका लाभ मिलेगा।

बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिंद-जय भारत

रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए इलेक्ट्रोपैथी कारगर औषधि

अभिव्यक्ति

भागीरथ चौधरी

सांसद अजमेर, राजस्थान

इलेक्ट्रोपैथी दवाएं कोरोना रोकथाम एवं उपचार में कितनी उपयोगी रही हैं, यह जनता के बीच प्रचारित करने वाली बात है। हमारे किशनगढ़ में मैं लंबे समय से इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों से जुड़ा रहा हूं। अभी इनके द्वारा वितरित की जा रही इलेक्ट्रोपैथी दवा इम्यूनिटी बूस्टर के लिए आयोजित कैंपों में भी मुझे रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

मैंने स्वयं भी इस इम्यूनिटी बूस्टर को उपयोग में लिया है। मैं इस पद्धति के परिणामों से प्रभावित हूं। हम सब मिलकर दिल्ली में इसकी मान्यता के लिए प्रयत्न करेंगे। यह कार्य होने से इस पद्धति का तेजी से विकास हो सकेगा एवं जनता लाभान्वित होगी।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र जी के सानिध्य में कोविड-19 और इलेक्ट्रोपैथी-जागरण बचाव और चिकित्सा विषय पर आयोजित इलेक्ट्रोपैथी वेबीनार में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

भारत में कोरोना के विरुद्ध लड़ाई भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 22 मार्च को लगे जनता कर्फ्यू से ही प्रारंभ हो गई थी। धीरे-धीरे देश में चिकित्सा सुविधाओं का विकास एवं वैक्सीन के क्षेत्र में हमारी अग्रणी भूमिका ने इस महामारी से लड़ने में सहायता प्रदान की है।

21 अप्रैल, 2020 को भारत सरकार द्वारा कोरोना से लड़ने के लिए आयुष पद्धतियों को अनुमति देना अपने आप में बहुत ही प्रशंसनीय कार्य रहा है। इस अनुमति के बाद आयुर्वेद, होम्योपैथी, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी इत्यादि के साथ-साथ इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सा पद्धति ने भी लोगों को इस रोग से बचाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज की वेबीनार में इलेक्ट्रोपैथी द्वारा किए गए कोरोना से बचाव के कार्यों एवं इसकी चिकित्सा पर आए परिणामों की जानकारी हेमंत सेठिया जी ने सबके सामने विस्तार से रखी है। यह जानकारी वास्तव में उत्साह देने वाली होगी कि इलेक्ट्रोपैथी दवाएं कोरोना रोकथाम एवं उपचार में कितनी उपयोगी रही हैं यह जनता के बीच प्रचारित करने वाली बात है। हमारे किशनगढ़ में मैं लंबे समय से इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों से जुड़ा रहा हूं। अभी इनके द्वारा वितरित की जा रही इलेक्ट्रोपैथी दवा इम्यूनिटी बूस्टर के लिए आयोजित कैंपों में भी मुझे रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मैंने स्वयं भी यह इम्यूनिटी बूस्टर उपयोग में लिया है। मैं इस पद्धति के परिणामों से प्रभावित हूं।

मेरा सभी से निवेदन है कि कोरोना से डरे नहीं। सरकारी गाइडलाइन एवं कोविड प्रोटोकॉल का हम सब अनुशासित रह पालन करें एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए इलेक्ट्रोपैथी औषधियों का प्रयोग करते रहें।

हम सब मिलकर दिल्ली में इसकी मान्यता के लिए प्रयत्न करेंगे। यह कार्य होने से ही इस पद्धति का तेजी से विकास हो सकेगा एवं जनता लाभान्वित होगी।

धन्यवाद।

महामारी में जन-शिक्षण और जन-सुरक्षा सुनिश्चित करने में इलेक्ट्रोपैथी का बड़ा योगदान

सामयिक

राज्यवर्धन सिंह राठौड़
सांसद, जयपुर ग्रामीण, राजस्थान

यह जानकर प्रसन्नता है कि केवल पेड़-पौधों के रसों पर आधारित यह सरल एवं सुरक्षित पद्धति कोविड-19 के बचाव एवं उपचार में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आपने हम सांसदों को इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सा पद्धति के लिए केंद्र सरकार में प्रयत्न करने की जो बात कही है, उसको हम सब मिलकर अवश्य करेंगे। इलेक्ट्रोपैथी दवाओं के परिणामों की जो जानकारी दी गई है, मैं समझता हूं वह भी इस वेबीनार के माध्यम से हजारों लोगों तक पहुंच रही है, यह एक सराहनीय प्रयास है। वास्तव में जन-शिक्षण और जन-सुरक्षा सुनिश्चित करना इलेक्ट्रोपैथी की बड़ी पहल है। कोविड से हम सबको मिलकर लड़ना है। सभी नियमों का पालन करते हुए हम सुरक्षित एवं स्वस्थ रहें, यही मेरी कामना है।

आदिकाल से भारत में विभिन्न प्रकार की चिकित्सा विधाओं से मनुष्य को स्वस्थ एवं रोग मुक्त करने का प्रयास चलता रहा है। भारत की संस्कृति में दुनिया से आने वाले हर अच्छे ज्ञान और विज्ञान को स्वीकार करने का दर्शन दिखाई देता है।

इस वैश्विक महामारी में हमने देखा है कि दुनिया भर में विभिन्न प्रकार के चिकित्सकीय प्रयोग इसकी रोकथाम एवं उपचार के लिए किए जा रहे हैं। हमारे यहां भी हमारी प्राचीन पद्धति आयुर्वेद-योग सहित अनेक पद्धतियों ने अपने-अपने तरीके से इस महामारी से बचाव के प्रयत्न किए हैं। इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों ने भी अपनी भूमिका निभाई है।

मेरे लोकसभा क्षेत्र में अनेक इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सक कार्यरत हैं। विभिन्न अवसरों पर इस पद्धति के बारे में उनसे चर्चा भी हुई है। लेकिन आज इस वेबीनार में मुझे इस पद्धति के बारे में और अधिक जानने का अवसर मिला। यह जानकर प्रसन्नता है कि केवल पेड़-पौधों के रसों पर आधारित यह सरल एवं सुरक्षित पद्धति कोविड-19 के बचाव एवं उपचार में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। श्री हेमंत सेठिया जी ने इलेक्ट्रोपैथी दवाओं के परिणामों की जो जानकारी दी है, मैं समझता हूं वह भी इस वेबीनार के माध्यम से हजारों लोगों तक पहुंच रही है, यह एक सराहनीय प्रयास है।

भारत सरकार द्वारा इस महामारी से लड़ने के लिए सभी चिकित्सा पद्धतियों को अनुमति देने के कारण भी इन प्रयासों को और बल मिला है। इसके लिए मैं माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

आज के वेबीनार में माननीय राज्यपाल महोदय का आशीर्वचन बहुत ही प्रेरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को अधिक अवसर दिए जाने का आह्वान करता है। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में मुझे रहने का सौभाग्य प्रदान किया गया इसके लिए मैं इलेक्ट्रोहोम्योपैथी चिकित्सा परिषद एवं श्री हेमंत सेठिया जी का हृदय से आभारी हूं।

धन्यवाद।

□□□

दृश्य-श्रव्य माध्यमों से जन-जागरण सहज और परिणामकारी

वृत्त-चित्र

वेदांत सेठिया

इलेक्ट्रोपैथी विषय पर डॉक्यूमेंट्री फिल्म के निर्माणकर्ता

(डॉक्यूमेंट्री फिल्म के चुनिंदा अंश प्रस्तुत हैं।)

भारतवर्ष में हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व आयुर्वेद की खोज की और 'सर्वे संतु निरामया' का आदर्श स्थापित किया। परंतु विज्ञान निरंतर गतिशील है और कोई भी चिकित्सा पद्धति अपने आप में पूर्ण नहीं होती। इसलिए दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने अनुसंधान व प्रयोगों के बाद डेढ़ सौ से अधिक चिकित्सा पद्धतियों की खोज की। जिनमें एलोपैथी, होम्योपैथी, यूनानी, प्राकृतिक चिकित्सा एवं इलेक्ट्रोपैथी प्रचलन में हैं। इन सभी पद्धतियों में इलेक्ट्रोपैथी पूर्णतया पादपीय औषधियों पर निर्भर एकमात्र चिकित्सा पद्धति है। यह पूरी दुनिया में तेजी से मानव स्वास्थ्य का आधार बन रही है और लोगों को स्वास्थ्य लाभ दे रही है।

इलेक्ट्रोपैथी पद्धति के उद्भव का भी अपना एक रोचक इतिहास है। इटली के प्रख्यात वैद्यकीय शास्त्र विशेषज्ञ श्री काउंट सीजर मैटी जीवन के प्रारंभ में सेना एवं प्रशासनिक पदों पर रहे। लेकिन उनका प्रिय विषय औषधीय शास्त्र था। अत: उन्होंने अपने जीवन के मध्याह्न में पार्लियामेंट सदस्य का पद छोड़कर विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का अध्ययन करना शुरू किया जिसमें उन्हें कुछ खामियां नजर आई, तो वे एक दोष रहित चिकित्सा प्रणाली की खोज में जुट गए।

एक दिन उन्होंने देखा कि उनका पालतू कुत्ता बीमार पड़ गया है और रोज बगीचे में जाकर एक खास वनस्पति के पत्तों को चबाता है। कुछ ही दिनों में कुत्ता एकदम स्वस्थ हो गया। मैटी जी को यहीं से अपनी खोज की दिशा मिली और उन्होंने अपना अनुसंधान प्रारंभ कर दिया तथा अनुसंधान में उन्होंने पाया कि जब हमारा भोजन वनस्पतियां हैं तब समस्त रोगों का उपचार भी वनस्पतियों में ही छुपा है। 15 वर्षों के गहन अध्ययन के पश्चात 1865 ईस्वी में पूर्णतया दोषमुक्त और निरापद पद्धति इलेक्ट्रोपैथी की सौगात उन्होंने दुनिया को दी; जिसे इलेक्ट्रोहोम्योपैथी के नाम से भी जाना जाता है।

इलेक्ट्रोहोम्योपैथी चिकित्सा पद्धति नाम सुनकर अधिकतर लोगों में इसके करंट थैरेपी या होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की एक शाखा होने का भ्रम उत्पन्न होता है। परंतु ये दोनों भ्रांतियां पूर्णतया गलत हैं। यह ना तो कोई करंट थैरेपी है और ना ही कोई होम्योपैथी की ही कोई शाखा है। इलेक्ट्रोहोम्योपैथी शब्द में इलेक्ट्रो हमारे शरीर में उपस्थित धनात्मक और ऋणात्मक प्रकार की इलेक्ट्रिसिटी को दर्शाता है। इस इलेक्ट्रिसिटी की संतुलित अवस्था, अर्थात शरीर की स्वस्थ अवस्था है तथा इसकी असंतुलित अवस्था रोग की दशा है। होमियो शब्द, यह शब्द चिकित्सा विज्ञान में किसी भी असमानता को समानता की स्थिति में बदलने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। पैथी शब्द चिकित्सा पद्धति के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इन तीनों गुणों के समुच्य को ही इलेक्ट्रोहोम्योपैथी या इलेक्ट्रोपैथी कहा जाता है।

इलेक्ट्रोपैथी के सिद्धांत के अनुसार हमारे शरीर में ब्लड और लिम्फ नाम के दो द्रव्य निरंतर प्रवाहित होते रहते हैं और शरीर को पोषण देते हैं। ब्लड की अशुद्धि ही रोग का कारण है और उसकी शुद्ध अवस्था निरोगी अवस्था होती है। अत: इलेक्ट्रोपैथी में अशुद्ध ब्लड और लिंफ को वनस्पति औषधियों द्वारा शुद्ध किया जाता है।

मैटी जी ने इलेक्ट्रोपैथी में तीन प्रकार की प्रकृति बताई है- रक्त प्रकृति, रस प्रकृति और मिश्रित प्रकृति। इलेक्ट्रोपैथी में कुल 114 औषधीय पौधों का इस्तेमाल किया जाता है। एक विशेष विधि कोहोबोशन द्वारा औषधियां बनाई जाती हैं। यह औषधियां ड्रॉप, टेबलेट, सिरप, कैप्सूल, पाउडर और इंजेक्शन फॉर्म में पाई जाती हैं। विभिन्न रोगों में इलेक्ट्रोपैथी औषधियां अत्यंत ही प्रभावशाली पाई गई हैं जैसे कि किडनी स्टोन, पाइल्स, रेस्पिरेटरी सिस्टम के रोग, ओवेरियन सिस्ट, स्किन डिजीज, डाइजेस्टिव डिसऑर्डर्स, माइग्रेन, नर्वस सिस्टम के रोग, हृदय रोगों में तथा कैंसर की सेकंड स्टेज तक भी यह पद्धति प्रभावशाली एवं अत्यंत कारगर है।

इटली में जन्म के मात्र 30 साल बाद यानी 1895 ई. में दक्षिण भारत के मंगलूर शहर में फादर मूलर ने कुष्ठ रोगियों के लिए इलेक्ट्रोपैथी औषधियों पर आधारित पहला चिकित्सालय खोला। 1953 में उत्तर प्रदेश की सरकार ने इलेक्ट्रोपैथी को मान्यता देने के संबंध में परीक्षण प्रारंभ किया। राजस्थान में इलेक्ट्रोपैथी की मान्यता के लिए 1990 से ही प्रयत्न शुरू हो गए थे। लंबे समय तक जांच करते हुए वैज्ञानिक एवं विधिक कमेटियों ने सरकार को दृढ़ अनुशंसा की थी कि इलेक्ट्रोपैथी को राजस्थान में मान्यता दी जानी चाहिए। रिपोर्ट पर अमल करते हुए 9 मार्च, 2018 को राजस्थान विधानसभा में राजस्थान इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सा पद्धति विधेयक पारित किए जाने की घोषणा के साथ ही राजस्थान इलेक्ट्रोपैथी को मान्यता देने वाला देश का प्रथम राज्य बन गया और इस घोषणा के साथ ही इस पद्धति की मान्यता के लंबे संघर्ष को अपना मुकाम मिल गया।

आज इस महत्वपूर्ण अवसर पर इलेक्ट्रोपैथी परिवार राजस्थान के सभी राजनीतिक दलों के डेढ़ सौ से अधिक माननीय जनप्रतिनिधियों, सांसदों व विधायकों का अपने हृदय के अंत:स्थल से आभार व्यक्त करता है जिन्होंने इलेक्ट्रोपैथी की मान्यता के मुद्दे को शासन स्तर पर प्राथमिकता का विषय बनाया। राजस्थान की आर्थिक-भौगोलिक-सामाजिक परिस्थितियों में इलेक्ट्रोपैथी सर्वाधिक उपयुक्त, सस्ती, सरल, सुलभ और सुगम चिकित्सा पद्धति साबित हो रही है। इस चिकित्सा पद्धति की उन्नति व विकास द्वारा राज्य की स्वास्थ्य जरूरतों को बल मिलेगा। आज पूरे प्रदेश में इलेक्ट्रोपैथी के हजारों चिकित्सक व छात्र राजस्थान के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच कर जनता के स्वास्थ्य की सार-संभाल पूरी जिम्मेदारी से करते हुए राजस्थान सरकार के स्वास्थ्य मिशन में सहयोगी बने हुए हैं।

□□□

प्रधानमंत्री केयर फंड के लिए 2, 21,000 रुपए का चैक जयपुर के सांसद श्री रामचरण बोहरा को भेंट किया।

मुख्यमंत्री सहायता कोष के लिए मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी श्री देवाराम सैनी को 3,21,000 रुपए का चैक सौंपा गया।

अजमेर के माननीय सांसद श्री भागीरथ चौधरी ने इलेक्ट्रोपैथी इम्यून बूस्टर दवा केन्द्र का उद्घाटन किया और 400 रोगियों को नि:शुल्क दवा पिलाई।

जयपुर, मंगलवार
8 दिसंबर 2020
सिटी स्केन CITY SCAN राजस्थान पत्रिका 5

परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों के साथ इलेक्ट्रोपैथी को बढ़ावे की जरूरत

कोविड-19 इलेक्ट्रोपैथी वेबिनार में बोले राज्यपाल

डेली न्यूज

जयपुर ▷ 7 दिसंबर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद राजस्थान की ओर से आयोजित कोविड-19 इलेक्ट्रोपैथी वेबिनार में बोलते हुए राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि इलेक्ट्रोपैथी एक हर्बल चिकित्सा है। यह पद्धति जटिल रोगों में कारगर हो रही है। कोरोना

काल में इस पद्धति से बचाव जागरण एवं उपचार के लिए किए कार्य प्रशंसनीय हैं। इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों की ओर से इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए हजारों लोगों पर किया गया अध्ययन भी इस पद्धति के विकास में सहायक सिद्ध होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने केंद्र सरकार ने कोरोना से लड़ाई में आयुष पद्धतियों को भी शामिल किया है।

मेघवाल ने कहा कि इलेक्ट्रोपैथी में दवा का आधार केवल औषधीय पौधों का रस है और इस प्रकार से चिकित्सा करना हमारी पुरातन परंपरा रही है। इस मौके पर सांसद रामचरण बोहरा ने बताया कि इस पद्धति की आवश्यकता इसलिए है कि हमें सस्ती एवं सुरक्षित चिकित्सा गांव-गांव तक पहुंचानी है।

इम्यूनिटी बढ़ाने में सहायक : सेठिया

इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद के अध्यक्ष हेमंत सेठिया ने बताया कि इम्युनिटी बढ़ाने वाली दवाई राज्य में 26,396 व्यक्तियों को पिलाई गई, जिनमें दो को कोरोना हुआ एवं 60-65 को सर्दी-जुखाम हुआ। जितेंद्र खंडेलवाल ने बताया कि कार्यक्रम में सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, भागीरथ चौधरी, देवजी पटेल एवं रंजीता कोली, प्रताप भानु सिंह शेखावत आदि मौजूद थे। कार्यक्रम से ऑस्ट्रेलिया, नेपाल, दुबई एवं कनाडा से भी लोगों ने हिस्सा लिया।

इलेक्ट्रोपैथी से इलाज के सकारात्मक परिणामों का हो व्यापक प्रसार

रोगमुक्त विश्व के लिए वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों में शोध एवं अनुसंधान को बढ़ावा मिले : राज्यपाल

जयपुर, (कासं)। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा है कि मानवता के कल्याण के लिए परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के साथ ही इलेक्ट्रोपैथी जैसी वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को भी बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है। उन्होंने सी चिकित्सा पद्धतियों के सकारात्मक परिणामों पर गहन शोध और अनुसंधान करने पर जोर देते हुए से ज्ञान से रोगमुक्त विश्व की ओर आगे बढ़ने का आह्वान किया है। मिश्र सोमवार को यहां राजभवन में इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सा पद्धति के विशेष वर्चुअल संवाद कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में पूरे विश्व के कल्याण की बात है। इसे दृष्टिगत रखते हुए वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों का मानव कल्याण में अधिकाधिक उपयोग किए जाने की वैश्विक सोच से कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कोरोना के इस समय में आयुर्वेद की कारगर भूमिका की चर्चा

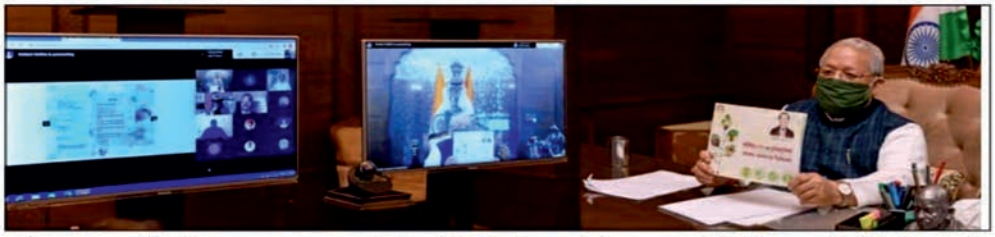

करते हुए कहा कि विश्व स्तर पर पारम्परिक भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के महत्व को स्वीकार किया गया है। इसी तरह होम्यौपैथी और इलेक्ट्रोपैथी जैसी पद्धतियों का भी महत्व देखा गया है। राज्यपाल कहा कि हमारे यहां संसाधनों की कमी नहीं है। चिकित्सा पद्धतियों के विषय विशेषज्ञ भी हैं। इसे देखते हुए प्रयास यह किए जाएं कि भारत वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों में विश्व का बड़ा केन्द्र बने। उन्होंने इस बात पर चिंतन और मनन करने की आवश्यकता जताई कि कैसे वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के मानव स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए अधिक से अधिक कार्य हो सके। मिश्र ने इलेक्ट्रोपैथी से ईलाज से जुड़े ज्ञान और नुस्खों को आधुनिक विज्ञान से जोड़ते हुए भी वृहद स्तर पर कार्य किए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पूर्णतरू हर्बल इस चिकित्सा पद्धति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में जो महत्वपूर्ण भूमिका है, उससे संबंधित ज्ञान का अधिकाधिक प्रसार किया जाए। उन्होंने कम से कम साइड इफेक्ट्स वाली चिकित्सा पद्धतियों के विकास के साथ ही उनकी आम जन में सहज उपलब्धता के लिए भी प्रयास किए जाने पर जोर दिया। राज्यपाल ने केन्द्र सरकार द्वारा सभी आयुष चिकित्सा पद्धतियों को अनुमति प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित करने की सराहना करते हुए कहा कि यह कदम सरकार के लोक कल्याणकारी दृष्टिकोण को प्रकट करता है। उन्होंने कहा कि यह जरूरी है कि सी चिकित्सा पद्धतियों को अधिकाधिक प्रोत्साहन मिले जो सभी के लिए सहज सुलभ हो।

यदि आप अन्याय के विरूद्ध हाथ उठाना चाहते हैं तो हाथ में उठाइये अधिकार!

अब परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों के साथ-साथ इलेक्ट्रोपैथी को बढ़ावा देने की जरूरत : राज्यपाल

कोरोना : इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद राजस्थान द्वारा आयोजित की गई वेबिनार

भास्कर संवाददाता | कुचामन सिटी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद राजस्थान द्वारा आयोजित कोविड 19 इलेक्ट्रोपैथी वेबिनार को संबोधित करते हुए राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि वर्तमान समय में इस प्रकार के वेबिनार आयोजित करना बहुत उपयोगी है। राज्यपाल ने कहा कि इलेक्ट्रोपैथी एक हर्बल चिकित्सा है। यह पद्धति जटिल रोगों में कारगर हो रही है। कोरोना काल में इस पद्धति से बचाव, जागरण एवं उपचार के लिए किए गए कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों द्वारा इम्युनिटी बढ़ाने के लिए हजारों लोगों पर किया गया अध्ययन भी इस पद्धति के विकास में जहां सहायक सिद्ध होगा, वहीं पर इस रोग से लड़ने में अपनी अहम भूमिका निभाएगा। राज्य व केंद्र सरकार इस पद्धति के विकास में सहयोगी बने ऐसा प्रयत्न सभी को करना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कोरोना एवं वैक्सीन के संबंध में भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए बताया कि इस लड़ाई में आयुष पद्धतियों को भी शामिल किया है। जयपुर के सांसद रामचरण बोहरा ने बताया कि इस पद्धति की आवश्यकता इसलिए है कि हमको सरल सस्ती एवं सुरक्षित चिकित्सा गांव-गांव तक पहुंचानी है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद के जिला सचिव डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने जानकारी दी कि कोरोना से बचाव हेतु इम्युनिटी बढ़ाने वाली दो दवाई स्क्रोफोलोसो (एस-1) एवं वर्मीफुगो (वर -1) दवाई राज्य भर में 26,396 व्यक्तियों को पिलाई गई, जिनमें मात्र दो को कोरोना हुआ एवं 60-65 व्यक्तियों को सर्दी जुखाम हुआ। अन्य सभी आज स्वस्थ हैं एवं कोरोना से सुरक्षित हैं।

कुचामन सिटी. वेबिनार को संबोधित करते हुए राज्यपाल।

इधर...400 रोगियों को इलेक्ट्रोपैथी से ठीक किया

डॉक्टर हेमन्त सेठिया ने बताया कि 400 से अधिक रोगियों को इलेक्ट्रोपैथी दवाओं के उपचार से कोरोना पॉजिटिव से कोरोना नेगेटिव किया गया है। यह अपने आप में भविष्य की संभावनाओं का अच्छा संकेत है। जितेंद्र खंडेलवाल ने बताया कि इस कार्यक्रम में सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, सांसद भागीरथ चौधरी, सांसद देवजी पटेल एवं भरतपुर से सांसद रंजीता कोली, प्रतापभानु सिंह शेखावत ने भाग लिया। इस कार्यक्रम से ऑस्ट्रेलिया, नेपाल, दुबई एवं कनाडा से भी लोगों ने भाग लिया। सचिव डॉ. गोविंद लाल सैनी ने आभार व्यक्त किया। श्वेता जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दैनिक नवज्योति Jaipur City - 08 Dec

इलेक्ट्रोपैथी से इलाज का हो व्यापक प्रसार: मिश्र

ब्यूरो/नवज्योति, जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा है कि मानवता के कल्याण के लिए परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के साथ ही इलेक्ट्रोपैथी जैसी वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को भी बढ़ावा देना चाहिए। मिश्र सोमवार को यहां राजभवन में इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सा पद्धति के विशेष वर्चुअल संवाद कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने ऐसी चिकित्सा पद्धतियों के सकारात्मक परिणामों पर गहन शोध और अनुसंधान करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में पूरे विश्व के कल्याण की बात है। इसे देखते हुए वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों का मानव कल्याण में अधिकाधिक उपयोग किए जाने की वैश्विक सोच से कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कोरोना के इस समय में आयुर्वेद की कारगर भूमिका की चर्चा करते हुए कहा कि विश्व स्तर पर पारम्परिक भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के महत्व को स्वीकार किया गया है। राज्यपाल कहा कि हमारे यहां संसाधनों की कमी नहीं है। चिकित्सा पद्धतियों के विषय विशेषज्ञ भी हैं। इसे देखते

कोरोना की लड़ाई सभी पद्धतियों को मिलकर लड़नी होगी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

कुचामनसिटी. इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद, राजस्थान की ओर से सोमवार को दोपहर में इलेक्ट्रोपैथी और कोरोना विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया है। मुख्य अतिथि राज्यपाल कलराज मिश्र रहे। आयोजित इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों की ओर से इस पूर्णतया हर्बल चिकित्सा पद्धति के माध्यम से कोरोना के संबंध में जागरण बचाव एवं चिकित्सा के ऊपर किए गए व्यापक कार्यों को लेकर चर्चा की गई। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि इलेक्ट्रोपैथी एक हर्बल चिकित्सा है। यह पद्धति जटिल रोगों में कारगर हो रही है। कोरोना काल में इस पद्धति से बचाव जागरण एवं उपचार के लिए किए गए कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सकों द्वारा इम्युनिटी बढ़ाने को लेकर हजारों लोगों पर किया गया अध्ययन भी इस पद्धति के विकास में जहां सहायक सिद्ध होगा, वहीं पर इस रोग से लड़ने में अपनी अहम् भूमिका निभाएगा।

अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय संसदीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कोरोना एवं वैक्सीन के संबंध में भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए बताया कि इस लड़ाई में आयुष पद्धतियों को भी शामिल किया है। मेघवाल ने कहा कि इलेक्ट्रोपैथी की गुणवत्ता इसलिए सुनिश्चित है, क्योंकि इसमें दवा का आधार केवल औषधीय पौधों का रस है।जयपुर के सांसद रामचरण बोहरा ने बताया कि इस पद्धति की आवश्यकता इसलिए है कि हमको सरल सस्ती एवं सुरक्षित चिकित्सा गांव-गांव तक पहुंचानी है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद के जिला सचिव डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने कहा कि कोरोना से बचाव के लिए इम्युनिटी बढ़ाने वाली दो दवाई स्क्रोफोलोसो एवं वर्मीफुगो दवाई राज्य भर में 26,396 व्यक्तियों को पिलाई गई। जिनमें मात्र दो को कोरोना हुआ एवं 60-65 व्यक्तियों को सर्दी जुखाम हुआ। परिषद के अध्यक्ष हेमंत सेठिया ने बताया कि 400 से अधिक रोगियों को इलेक्ट्रोपैथी दवाओं के उपचार से कोरोना पॉजिटिव से कोरोना नेगेटिव किया गया है। अध्यक्ष सेठिया ने राज्य में इलेक्ट्रोपैथी बोर्ड गठन का कार्य सरकार द्वारा शीघ्र संपादित करने की मांग उठाई। परिषद के प्रवक्ता जितेंद्र खंडेलवाल ने बताया कि सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, अजमेर के सांसद भागीरथ चौधरी, जालौर के सांसद देवजी पटेल एवं भरतपुर सांसद रंजीता कोली, प्रताप भानु सिंह शेखावत ने भी भाग लिया।

कुचामनसिटी. इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद की ओर से आयोजित वेबीनार में सम्बोधित करते राज्यपाल कलराज मिश्र।

विस्तृत खबरों और फोटोग्राफ्स के लिए देखें...
rajasthanpatrika.com

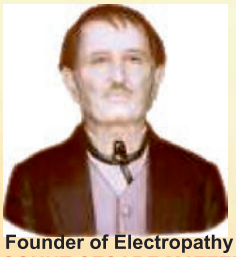

Founder of Electropathy
COUNT CESARE MATTEI
11 January 1809

I believe that this will be the first and last medical system in the world which is completely dependent on medicinal plants and should be. Because our food is only Vegetables and plants, then we have to find the treatment of disease in those medicinal plants. Only then can we always keep ourselves healthy.

JOURNEY OF ELECTROPATHY IN RAJASTHAN

1. The demand for recognition of Electropathy system of medicine in Rajasthan was being raised since 1998.
2. More than 100 MLAs of all parties recommended from time to time to the Health Minister and Chief Minister of the state to recognise this system of medicine.
3. In 2007, the first committee was constituted by the Government of Rajasthan to investigate the merits of Electropathy.
4. By 2017, 5 high level committees were formed by the Rajasthan government to investigate Electropathy

S.No.	YEAR	COMMITTEE	SUBJECT
1	2007	I Committee	Merit-demerit Investigation
2	2009	II Committee	Merit-demerit Investigation
3	2015	III Committee	Merit-demerit Investigation
4	2015	IV Committee	Legal Aspects
5	2017	V Committee	Scientific & Legal Analysis

5. On 27th September 2017, Committee submitted its report to the Government of Rajasthan with the Scientific and Legal Analysis in which it was strongly recommended to recognise this system of medicine in Rajasthan.
6. On 9th March 2018, The Rajasthan Electropathy System of Medicine Act-2018 was unanimously passed in the Rajasthan Legislative Assembly.
7. On 11th April 2018, this act was published in the Rajasthan Gazette after the Governor's approval.
8. On 30th September 2018, the first registrar of the Electropathy board was appointed.
9. The office of Electropathy board was kept by the government in Ayush Bhawan, Pratap Nagar, Sanganer (Jaipur)
10. On 5th October 2008, seven members, including the chairman, were nominated for the first board of Electropathy from the Chief Minister's Office.
11. In the session 10th of the 14th Legislative Assembly of Rajasthan, in answer to question number 4322, information was given that at present Electropathy is included under the Department of AYUSH.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय संविधान में वर्णित नागरिकों के मूल कर्तव्य

51 क. मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह-

(क) संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें;

(ड़) भारत के सभी लोगों में समरसता समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझें और उसका परिरक्षण करें;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखें;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू लें;

(ट) यदि माता - पिता या संरक्षक हैं, 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

प्रकाशक: इलेक्ट्रोहोम्योपैथी चिकित्सा परिषद, 2/320, विद्याधर नगर, जयपुर - 302039, ईमेल - electropathy141@gmail.com